ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

एक प्रति : 5 रुपये
वर्ष 40, अंक 22
सोमवार 27 मार्च, 2017 से रविवार 2 अप्रैल, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

## आर्य परिवार
## होली मंगल मिलन

होली के दिन
सभी आएँ सपरिवार
होली बने एक यादगार
पुष्प चंदनव खुशबू की बहार

## 94 दिन के बच्चे से लेकर 99 वर्ष की आयु तक के बुजुर्गों का मिलन पर्व बना होली



दानवीर सेठ लाल रघुमल आर्य जी के दोहित्र श्री राजेन्द्र गुप्ता जी का सार्वजनिक अभिनन्दन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं श्री योगेश आर्य, श्री हरीश चड्ढा, श्री संजय कुमार, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं श्रीमती वीणा आर्या जी।



महाशय धर्मपाल जी को [illegible] प्रदान करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी [illegible] आर्य कन्या सी. सै. स्कूल के प्रबन्धक श्री मनोज कुमार जी साथ में [illegible] राजेन्द्र गुप्ता जी।

## हजारों आर्य परिवारों के सदस्यों की उपस्थित से भरा आयोजन स्थल

# समारोह के अवसर पर अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान

आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को वर्ष 2017 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी, श्रीमती शारदा आर्या जी। साथ में हैं सभा कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री योगेश मुंजाल जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी एवं अन्य

आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित अधिकारियों प्रधान -मा. रामपाल जी एवं उप प्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल जी।

श्री दिनेश पथिक जी का स्वागत करते श्री सत्यानन्द आर्य जी

हास्य कवि श्री राजेश चेतन जी का स्वागत करते सभा मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी

समारोह में भाग लेने आए महानुभावों का धन्यवाद देते श्री हर्षप्रिय आर्य जी

विश्व पुस्तक मेले में सेवा प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं का स्वागत

छोटे बच्चों के लिए गुब्बारों की विशेष सुविधा

समारोह में उपस्थित सबसे अधिक आयु के महानुभाव श्री टी.डी. चावला जी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में श्री मनोज गुलाटी जी, श्री सुरेन्द्र चौधरी जी, श्री योगेश आर्य जी एवं श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी।

सबसे नव विवाहित जोड़े श्री राघवेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सलोनी सिंह जी अपने परिवार के साथ

94 दिन के बच्चे के मा. यजुर के माता पिता को आशीर्वाद प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से

# 15वाँ आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

## आचार्य भद्रकाम वर्णी जी को दिया गया वर्ष 2017 का 'ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान'

## आर्यसमाज के स्वर्णिम इतिहास के मोती दानवीर सेठ रघुमल आर्य के दोहित्र श्री राजेन्द्र गुप्ता जी का हुआ सपत्नीक अभिनन्दन

### होली परस्पर प्रेम, सौहार्द व खुशहाली का सन्देश फैलाने का त्यौहार है – महाशय धर्मपाल

होली का त्यौहार मनुष्य को ईर्ष्या द्वेष तथा वैमनस्य को भुलाकर समानता और परस्पर प्रेम का दृष्टिकोण अपनाते हुए हंसी-खुशी एक दूसरे के गले मिलने और आपसी भाईचारे को बढ़ाने की प्रेरणा देता है। – धर्मपाल आर्य, प्रधान

★ "जगो-जगाओ संस्कृति बचाओ" योजना का शुभारम्भ
★ 28 मार्च से वस्त्र व उपयोगी वस्तु बैंक योजना प्रारम्भ
★ अक्तूबर 2017 बर्मा में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
★ उपस्थित समस्त आर्यजनों को दी 5 पुस्तकें पढ़ने की दी प्रेरणा – मोपला – युगधर्म – काला पहाड़ – हिन्दू संगठन – अन्तिम हिन्दू

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 12 मार्च 2017 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल, राजा बाजार कनॉट प्लेस दिल्ली में आयोजित 'आर्य परिवार होली मंगल मिलन' समारोह में आर्य शिरोमणि महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच.) ने हजारों आर्य जनों को होली पर शुभकामनाएं देते हुए कहा "होली परस्पर प्रेम, सौहार्द व खुशहाली का सन्देश फैलाने का त्यौहार है। मैं यहां आप सबको आशीर्वाद देता हूं और आप सब मुझे आशीर्वाद दें कि मैं इसी प्रकार होली पर हर वर्ष आता रहूं व आर्य समाज की सेवा में सदैव लगा रहूं।"

कार्यक्रम में सपरिवार पधारे दानवीर सेठ लाला रघुमल जी के नाती, लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के सचिव एवं पूर्व परिवहन मंत्री श्री राजेन्द्र गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रचना गुप्ता का दिल्ली सभा की ओर से स्मृति चिह्न व पीतवस्त्र से स्वागत किया गया। श्री योगेश मुंजाल जी (मुंजाल शोवा लिमि.) एवं माता शीला ग्रोवर (ग्रोवर संस लिमि.) ने पधार कर समारोह की शोभा में चार चाँद लगा दिये।

समारोह का शुभारम्भ जयपुर से पधारे वैदिक विद्वान् आचार्य उर्षबुध जी के ब्रह्मत्व में पूर्ण वैदिक विधि विधान द्वारा नवसंस्येष्टि यज्ञ से हुआ। यज्ञ संयोजक श्री मदन मोहन सलूजा जी ने आचार्य उर्षबुध जी का फूलमाला से स्वागत किया तथा सभी यजमानों का परिचय कराया। यज्ञ में श्रीमती नीलम एवं श्री यशपाल आर्य जी, डॉ. उमाशशि दुर्गा एवं श्री राजेन्द्र दुर्गा जी, श्रीमती मीनू सूद एवं श्री श्रीकान्त सूद जी, श्रीमती श्रुति एवं श्री अंकुर मखीजा जी, श्रीमती शिल्पा एवं श्री मनीष गोयल जी, श्रीमती शबनम एवं कै. अशोक गुलाटी जी, श्रीमती सुमेधा एवं श्री नितिन गुप्ता जी, श्रीमती नीतू एवं श्री संजीव मल्होत्रा जी मुख्य यजमान रहे। यज्ञोपरान्त आचार्य उर्षबुध जी द्वारा सभी यजमानों को पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद प्रदान किया गया व श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री योगेश आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री मदन मोहन सलूजा जी ने यज्ञ को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। मंच संचालन सभा महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा किया गया, कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी ने की।

कार्यक्रम के बीच-बीच में महामंत्री श्री विनय आर्य ने सभा की होने वाली गतिविधियों एवं आगामी योजनाओं से भी समस्त आर्य जनों को अवगत कराया, 1 व 2 अप्रैल को केरल में आयोजित होने वाले 'महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के नवनिर्मित परिसर के उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक सम्मलेन' में चलने के लिए आमन्त्रित किया। श्री विनय आर्य ने बताया कि "आर्य समाज के लिए महाशय धर्मपाल जी का योगदान अकथनीय है। महाशय जी के सहयोग से जिन राज्यों व देशों में आर्य समाज का नामोनिशान भी नहीं था वहां भी आज आर्य समाज का डंका बज रहा है और यह कार्य निरंतर निर्बाध गति से आगे भी चलता रहेगा।"

दिल्ली सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी कार्यकर्त्ताओं, दानी महानुभावों, सहयोगियों, मातृशक्ति व बच्चों को कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि "होली का पावन पर्व यह संदेश लाता है कि मनुष्य अपनी ईर्ष्या द्वेष तथा वैमनस्य को भुलाकर समानता और परस्पर प्रेम का दृष्टिकोण अपनाते हुए हंसी-खुशी एक दूसरे के गले मिलने और आपसी भाईचारे को बढ़ाने की प्रेरणा देता है।"

होली के शुभ अवसर पर दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों, गुरुकुलों, शिक्षा केन्द्रों के बच्चों ने दिल को छू लेने वाली प्रस्तुतियां पेश की। कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् हरीनगर, वैदिक शिक्षा केन्द्र प्रीत विहार, आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार, आर्य पब्लिक स्कूल श्रीनिवासपुरी, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, आर्यवीर दल, आर्यवीरांगना दल प्रीत विहार, आर्य समाज मंगोलपुरी एवं रघुमल आर्य सी. सै. स्कूल, राजा बाजार द्वारा सेठ लाला रघुमल जी के जीवन पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की। सेठ लाला रघुमल जी के जीवन पर आधारित नाटिका को प्रस्तुत करने में श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं श्रीमती वीना आर्या जी का विशेष सहयोग रहा। दिल्ली सभा की ओर से हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समारोह में उपस्थित सबसे बुजुर्ग एवं सबसे छोटे बच्चे व नवविवाहित दम्पत्ति को सम्मानित करने की परम्परा को निभाते हुए 99 वर्षीय श्री टी.डी. चावला जी को, 94 दिन के बालक यजुर आर्य एवं 5 दिन पूर्व दाम्पत्यसूत्र बंधन में बंधे नवदम्पत्ति आर्य समाज सागरपुर के मंत्री श्री मान्धाता सिंह जी के पुत्र श्री राघवेन्द्र सिंह व पुत्रवधू श्रीमती सलोनी सिंह जी को प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया गया। उक्त कार्य श्री शिव कुमार मदान उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सौंपा गया था। ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान से आचार्य भद्रकाम वर्णी जी एवं कुंवर सचदेवा जी को सम्मानित किया गया। हरियाणा से मा. रामपाल जी, योगेश मुंजाल जी, हास्य कवि राजेश चेतन जी, श्री कन्हैया लाल जी, देवेन्द्र पाल आर्य जी को श्री सुरेन्द्र कुमार रैली द्वारा स्मृति चिह्न व पीतवस्त्र से सम्मानित किया गया।

### म्यांमार (बर्मा) से पधारे श्री ओमप्रकाश एवं दीनबन्धु जी का परिचय

कार्यक्रम में पधारे अन्तर्राष्ट्रीय कवि श्री राजेश चेतन जी ने अपने मुक्तकों, चुटकुलों एवं रसभरी कविताओं से हजारों की संख्या में बैठे जनमानस को हंसा-हंसाकर लोटपोट कर दिया। बर्मा से पधारे श्री ओम प्रकाश एवं दीनबन्धु को महाशय जी द्वारा सम्मानित किया गया और श्री विनय आर्य जी ने अक्तूबर 2017 में बर्मा (म्यांमार) में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अन्त में ईनामी कूपन का ड्रा महाशय जी द्वारा किया गया जिसमें प्रथम पुरस्कार वेदों का सैट श्री प्रेम सिंह व द्वितीय पुरस्कार तांबे का हवन कुंड का सैट श्री सूजन को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में दिल्ली सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा। 'होली सो हो ली भुला दो उसे...' के गीत के साथ रंगबिरंगे पुष्पों की वर्षा करते हुए आर्यजनों ने जमकर होली खेली व नृत्य किया। शांतिपाठ व प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।


## भारत के सांस्कृति संन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

### इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

मूल्य : 205/- रुपये प्रचारार्थ मूल्य : 150/- रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339


**99 वर्षीय सबसे बुजुर्ग श्री टी.डी. चावला जी – 3 माह 4 दिन के सबसे छोटे बालक यजुर आर्य एवं 5 दिन पूर्व दाम्पत्यसूत्र बंधन में बंधे नवदम्पत्ति श्री राघवेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सलोनी जी का हुआ परिचय एवं सम्मान**

वेद-स्वाध्याय

# सभी मित्र हों

**अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।**
**अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।** -अथर्व. 19/15/6
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **इन्द्रः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

**शब्दार्थ - मित्रात् अभयं, अमित्रात् अभयम्**= मुझे मित्र से भय न हो, अमित्र से भी भय न रहे। **ज्ञातात् अभयम्**= जो ज्ञात हो गया है उससे भय न हो और **परोक्षात् अभयम्**= जो आगे है, आनेवाला है उससे भी भय न हो। **नः नक्तं अभयं, दिवा अभयम्**=हमें रात में भी अभय हो, दिन में भी अभय हो, **सर्वाः आशाः**= सब दिशाएँ, सब दिशाओं के वासी प्राणी **मम मित्रं भवन्तु**= मेरे मित्र हो जाएँ, मेरे मित्ररूप रहें।

**विनय** - हे जगदीश्वर! इस तेरे जगत् में, इस तेरे न्यायपूर्ण सच्चे शासन में रहते हुए मुझे कोई भी भय क्यों होना चाहिए? तू सब जगत् में सदा कल्याण-ही-कल्याण कर रहा है तो फिर मुझे कभी डर क्यों हो? भय करना नास्तिक होना है, तुझपर अविश्वास करना है, तुझे भुलाना है, तेरा द्रोही होना है, अतः है मेरे परम प्यारे, कल्याण स्वरूप स्वामिन्! आज से मैं मन की दुर्बलता को छोड़कर अभय रहने का व्रत लेता हूँ। मैं अपनी शक्तिभर किसी भी भय के अधीन न होऊँगा। हे मेरे जगदीश्वर! इसमें मेरी सहायता करो। भय न छोड़कर तो मैं संसार में कुछ भी नहीं कर सकता, सत्यपथ पर नहीं चल सकता, कभी भी तेरे दर्शन नहीं पा सकता, अतः हे प्रभो! मुझे ऐसा बल दो कि संसार में किसी भी मनुष्य से मुझे भय न हो; न मित्र से भय हो, न अमित्र से। सत्यपथ पर चलते हुए मुझे न मित्रों की नाराज़गी आदि का भय हो और न अमित्रों द्वारा क्लेश पाने का। तेरे सामने मित्र-अमित्र सब समान हैं। तेरे सामने मित्रों के अमित्र हो जाने से क्या डरना और अमित्रों द्वारा जो मुझ पर कष्ट-विपत् आता है उससे क्या घबराना? अनिष्ट तो मित्र और अमित्र दोनों द्वारा लाये जा सकते हैं और लाये जाते हैं, अतः इन दोनों से ही मुझे भय से बचा। जो कुछ है और जो कुछ होगा, वह सब निःसन्देह शुभ ही है। मेरा निर्बल मन बहुत-सी घटित, ज्ञात, परिचित बातों को अनिष्टकर मानकर उनसे तो भयत्रस्त होता ही है, पर वह आगे आनेवाली बातों में सदा अनिष्ट की आशंका करके भी यूँ ही भयपीड़ित बना रहता है-''आगे न जाने क्या होगा'', मेरे इस कर्म की सिद्धि होगी या नहीं, ''कहीं इसका फल-परिणाम बुरा न निकले'', इस प्रकार का जो भय मुझमें रहता है वह तो बड़ा ही आत्मघातक है, अतः हे मेरे अन्तर्यामिन्! मुझमें अब ऐसा ज्ञान प्रदीप्त कर दो कि मेरे सब मोह हट जाएँ और मैं तेरे देदीप्यमान कल्याणस्वरूप को देखता हुआ दिन में या रात में, सदा, सब कालों में, सब अवस्थाओं में अभय रहूँ। ऐसा बल दो कि अन्धकार हो या प्रकाश, विपत् हो या सम्पत्, अनुकूलताएँ हों या प्रतिकूलताएँ, मैं सब दिशाओं में सदा निर्भय रह सकूँ।

**साभार : वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

# राम का जन्म मस्जिद में हुआ था?

योगी आदित्यनाथ भारत के सबसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर मनोनीत हो गये। हर एक फैसले की तरह इस फैसले से भी लोगों में खुशी और निराशा बराबर का माहौल है। लेकिन जो सबसे बड़ा सवाल है वह है कि क्या अब अयोध्या में राम मंदिर बनेगा? हालाँकि यह मुद्दा साम्प्रदायिक बताया जाता रहा है ऐसा मुद्दा जिसे सुप्रीम कोर्ट भी नेताओं के पाले में फेंक देती है। इस बार फिर सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी करते हुए कहा कि दोनों पक्ष मसले को बातचीत के जरिए सुलझाएं। कोर्ट ने कहा कि ये धर्म और आस्था से जुड़ा मामला है और संवेदनशील मसलों का हल आपसी बातचीत से हो।

कुल मिलाकर देश के राजनीतिक हालात ऐसा हैं कि सुप्रीम कोर्ट भी इस मामले से अपनी दूरी बनाये रखना उचित समझ रही है क्योंकि भले ही यह मामला आम लोगों की आस्था का हो पर राजनितिक दलों के लिए यह मामला वोट के बिन्दु को प्रभावित कर देखा जाता रहा है। आजाद होने के बाद भारत के संविधान में हर व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी दी गई है, यह बात भी तय हुई कि 15 अगस्त 1947 को जो धार्मिक स्थल जिस स्थिति में था उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाएगा। लेकिन बाबरी मस्जिद को इससे अलग रखा गया। यानी यह एक विवादास्पद स्थान जमीनी विवाद माना गया जिसका फैसला होना था कि इस पर किसका अधिकार है! हिंदुओं का दावा है कि भगवान राम का उसी स्थान पर जन्म हुआ था, जहाँ बाबरी मस्जिद बनी हुई थी। वहाँ एक मंदिर था जिसे बाबर ने ध्वस्त करा कर बाबरी मस्जिद बनवा दी थी। वैसे तो बाबरी मस्जिद पर मालिकाना हक का मामला तो सौ बरस से भी अधिक पुराना है। लेकिन यह मामला अदालत पहुँचा 1949 में 23 दिसंबर को जब सवेरे बाबरी मस्जिद का दरवाजा खोलने पर पाया गया कि उसके भीतर हिंदुओं के आराध्य देव राम के बाल रूप की मूर्ति रखी थी। इस जगह हिंदुओं के आराध्य राम की जन्मभूमि होने का दावा करने वाले हिन्दुओं ने कहा था कि रामलला यहाँ प्रकट यानि पैदा हुए हैं लेकिन मुसलमान इस तर्क से सहमत नहीं थे और मामला कोर्ट में चला गया जमीन विवाद में उलझी अयोध्या रामजन्म भूमि ने अब मंदिर, मस्जिद विवाद का रूप ले लिया था।

खैर सविंधान की अवहेलना कर बाबरी मस्जिद को छह दिसंबर 1992 को ध्वस्त कर दिया गया था। उसके बाद हर साल इस दिन बाबरी मस्जिद के समर्थक ''काला दिन'' और मंदिर समर्थक विजय दिवस के रूप मनाते आ रहे रहे हैं हालाँकि 500 साल पहले वहाँ क्या था और क्या नहीं था, ये तो पुरातत्वविद और इतिहासकार या फिर राम ही जाने, लेकिन पिछले 100 साल से बाबरी मस्जिद भारत में धर्म और नफरत की राजनीति की धुरी बन कर रह गई है। हिन्दू राम के प्रति आस्था को तो भारतीय मुसलमान जिनका बाबर से कोई ताल्लुक दूर-दूर तक नहीं लेकिन एक जिद्द लेकर बैठे हैं। जबकि मुसलमानों का एक पढ़ा लिखा तबका समझता है कि जब भारत में इस्लाम का प्रवेश नहीं हुआ था तब तक यहाँ जरूर मंदिर ही रहा होगा और दूसरा इस्लाम में इबादत के लिए कोई विशेष स्थान जरूरी नहीं होता मसलन यदि कोई मस्जिद में इबादत के लिए घर से निकलता है यदि वह किसी कारण लेट हो जाये तो वह रास्ते में किसी चबूतरे, सड़क किनारे, बस या ट्रेन में भी नमाज अदा कर लेता है तो क्या वह जगह मस्जिद हो गयी? परन्तु पूजा के लिए निकला कोई हिन्दू मंदिर में ही पूजा करता है बीच रास्ते में नहीं। इस कारण बहुसंख्यक समुदाय की आस्था की कद्र करते हुए भी क्या मस्जिद दूसरी जगह नहीं बन सकती है!

बहरहाल बाबरी मस्जिद ध्वस्त की जा चुकी है लेकिन इसके मलबे में नफरत की राजनीति अब भी हो रही है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच किसी एक मुद्दे ने ऐसी खाई और ऐसा मतभेद पैदा नहीं किया जैसा कि बाबरी-राम मंदिर के मुद्दे ने किया है। भारतीय गणराज्य बाबरी मलबे का अभी तक बंधक बना हुआ है। भारत एक उदार और संवैधानिक समाज है. देश का संविधान भारत की जनता की सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब है। मौजूदा दौर में धर्मों पर किसी समूह संगठन या विशेष समुदाय एकाधिकार नहीं हो सकता। तिरुपति, ताजमहल और अयोध्या बिना किसी धार्मिक और सामुदायिक भेदभाव के प्रत्येक भारतीय की विरासत है। सदियों की कशमकश के बाद भारत एक बेहतर भविष्य की दहलीज पर है। सवा अरब भारतीय अतीत के मलबे के कब तक बंदी बने रहेंगे?

मेरा मानना है जब अयोध्या राम का जन्म स्थल है तो मुसलमानों को आगे बढ कर यह कहना चाहिए कि हां मंदिर बनाओ, तब ही मुसलमान एकता व भारतीयता का उदारता का सच्चा उदाहरण दे पाएँगे। यदि एक मुसलमान की हैसियत से वह बाबरी मस्जिद का केस जीत भी जाएँगे तो मुझे कोई दुख भी नहीं होगा, अगर हार जाएँगे तो कोई खुशी नहीं होगी क्योंकि मजहब या धर्म का पहला सबक ही है इंसानियत, भाईचारा, देश ने इस छोटे से मुद्दे की कीमत बहुत बड़ी चुकाई है, अब बस करो जब नबी की भूमि संयुक्त अरब अमीरात जैसा इस्लामिक मुल्क मंदिर के लिए जमीन दे सकता है। तब हमारा तो इतिहास साझा पूर्वज साझे, संस्कृति और विरासत साझी सब कुछ साझा है तो आओ मंदिर और मस्जिद भी साझा कर पूरे विश्व को एकता उदारता का क्यों न परिचय दें! ताकि अगली बार जब जनसँख्या की गणना हो तो उसमें हिन्दू और मुस्लिम नहीं बल्कि इंसानों की गणना में हमारा नाम आये।

**- सम्पादकीय**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य, समग्रक्रान्ति का शंखनाद

***.....प्रतिवर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस हमें जगाने और सम्भालने आता है। जिस उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं प्राप्ति के लिए संस्था का निर्माण किया गया था। उस दिशा में क्या खोया और क्या पाया है कितना हम आगे बढ़े हैं। नहीं बढ़े हैं तो क्या कारण रहे हैं, जिससे हम उद्देश्य की दिशा में पिछड़ रहे हैं। उन बातों का चिन्तन एवं मनन करना चाहिए।.....***

– डॉ. महेश विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द का स्वप्न और उद्देश्य था– देश देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का प्रचार एवं प्रसार हो। महाभारत के पश्चात् ऋषि निराले महापुरुष थे, जिन्होंने देश को स्वत्व, स्वधर्म, स्वदेश, स्वसंस्कृति, स्वभाषा आदि बोध कराया। उन्होंने वैचारिक समग्रक्रान्ति का शंखनाद किया। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, ईश्वर की जगह अनेक देवी–देवताओं तथा गुरुओं की पूजा हो रही थी। चारों ओर घोर अज्ञान, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने समस्त अवैदिक मिथ्या बातों को मिटाने तथा हटाने के लिए क्रांतिकारी विचारधारा की ज्वाला प्रज्ज्वलित की जो आर्य समाज कहलाया। आर्य समाज कोई पंथ, सम्प्रदाय व गद्दी नहीं है। इसके सभी मन्तव्य, आदर्श तथा मान्यताएं सार्वजनिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक तर्क, युक्ति आदि पर आधारित हैं।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द की विचारधारा, सिद्धान्तों, आदर्शों, विरासत और वसीयत का उत्तराधिकारी है। जिन उद्देश्यों एवं आदर्शों की पूर्ति के लिए ऋषि ने अनेक बार जहर पिया। पत्थर खाए, अपमान सहा, गालियां सुनीं सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए आहूत कर दिया। ऐसे महामानव का जीवन्त स्मारक आर्य समाज है। सच है कि आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी जी को बहुत थोड़ा समय मिला। वे असमय में हमसे विदा हो गए। ऋषि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित पागल, दीवाने जनूनवाले अनुयायियों ने अपना घरवार, जवानी और सर्वस्व देकर, आर्य समाज को राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सुधारक आदि क्षेत्रों में बुलन्दियों पर पहुंचा दिया। आर्य समाज के आरम्भिक काल के लोगों में तप, त्याग, सेवा, आदर्श, बलिदान, ऋषिभक्ति आदि के प्रेरक प्रसंग तथा उदाहरण पढ़ते और सुनते हैं तो हृदय श्रद्धाभक्ति व भावना से नत हो उठता है। भाव–विभोर होकर आंखें छलकने लगती हैं। आह! आर्य समाज का अतीत, कितना स्वर्णिम, गौरवपूर्ण, प्रेरक तथा आकर्षक था। चारों ओर ऋषि दयानन्द का चुम्बकीय आकर्षण तथा जादू सबके सिर पर चढ़कर बोल रहा था। अतीत का जितना भी गुणगान करें, थोड़ा है। वर्तमान पर जितनी चिन्ता और प्रश्नचिह्न लगाएं, वे भी थोड़े हैं।

मुख्यकार्य वेद प्रचार – आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्रनिर्माण तथा सत्यधर्म का प्रचार करना है। ''वेदप्रचार आर्य समाज के नाम धरोहर तथा वसीयत है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और कोई विचारधारा नहीं मानती है। वेद मन्दिर, वेद कथा वेद सम्मेलन तथा प्रातः प्रवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा सुन्दर विधिविधान युक्त यज्ञ होता हुआ और कहीं नहीं मिलेगा। वेद सबके हैं, सबके लिए हैं और सबको पढ़ने–सुनने का अधिकार है। नारी वेद पढ़ सकती है, पढ़ा सकती है। यज्ञ की ब्रह्मा बन सकती है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश तथा सन्देश है। आज दुनियां में 98 प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिन्होंने न वेद देखे हैं, न पढ़े हैं, न सुने हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार के लिए आर्य समाज बनाया था। वेद ज्ञान ही संसार को मानवता और जीवन जगत् का सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकता है। वेद का चिन्तन व सन्देश सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक तथा सार्वदेशिक है। यदि भूले, भटके, संसार को कोई सुख–शान्ति एवं आनन्द का सच्चा मार्ग दिखा सकता है तो केवल मात्र वह वेदमार्ग है।

आज आर्यसमाज का असली काम छूट रहा है। ये सभा, संगठन संस्थाएं, स्कूल, डी.ए.वी. आदि आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार–प्रसार मानव निर्माण तथा वेद प्रचार के लिए बनाए गए थे। जहां व्यक्ति को संस्कार, विचार और चरित्र निर्माण की शिक्षा–दीक्षा दी जाती है। आज समाज मन्दिरों में वेदाध्ययन शालाएं कोई नहीं खोल रहा है। वेद प्रचार घट रहा है। इससे जनता से सम्पर्क कट रहा है। जबसे सम्पत्तियां, स्कूल, दुकानें, एफ.डी. आदि की आमदनी बढ़ी है, तबसे विवाद, संघर्ष तथा पदलोलुपता आदि अधिक बढ़ रही है। जो आर्य समाज कभी सत्य, ईमानदारी एवं विश्वसनीयता के लिए उदाहरण बनता था। वैसी पहचान आज हमारी नहीं बन पा रही है।

आज समाज का उदय, झूठ, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम आदि के विरोध के लिए हुआ। इसका नारा था– जागते रहो! जागते रहो! इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज ने ढोंग अन्धश्रद्धा तथा गलत बातों का सदा विरोध किया है। आज संसार में बड़ी तेजी से मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम गुरुमहन्त आदि तेजी से फलफूल व बढ़ रहे हैं। कोई विचारधारा वाला इन गलत बातों का खण्डन नहीं कर रहा है। क्योंकि सभी ने अपनी दुकानदारी, पुजापा चढ़ावा आदि चलाना है। केवल मात्र आर्य समाज एक ऐसा संगठन है जो मिथ्या बातों का शुरू से विरोध करता रहा है। यदि आर्य समाज भी समझौतावादी और सनातनी बन गया, तो इन ढोगियों, पाखण्डियों, स्वयंभू गुरुओं, महन्तों महाराजों आदि से धर्म भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर भोली–भाली जनता को लूटने से कौन बचाएगा?

प्रतिवर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस हमें जगाने और सम्भालने आता है। जिस उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं प्राप्ति के लिए संस्था का निर्माण किया गया था। उस दिशा में क्या खोया और क्या पाया है कितना हम आगे बढ़े हैं। नहीं बढ़े हैं तो क्या कारण रहे हैं, जिससे हम उद्देश्य की दिशा में पिछड़ रहे हैं। उन बातों का चिन्तन एवं मनन करना चाहिए। वर्तमान आर्य समाज की त्रासदी एवं विडम्बना है कि जो होना चाहिए, वह नही हो रहा है। जो नहीं होना चाहिए, वह तेजी से हो रहा है। जिन बातों का ऋषि ने निषेध किया था, वे ही बातें अधिकांश में हो रही हैं। सभा, संगठन, संस्थाओं आदि की मीटिंगों में वैदिक धर्म की रक्षा, ऋषि सिद्धान्त, मिशन, वेद प्रचार आदि की पीड़ा चिन्ता व बेचैनी कहीं नजर नहीं आती। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों समस्याओं आदि में समय, शक्ति व धन व्यय हो रहा है। ऋषि ने एक स्थान पर कहा था–'यदि आर्य समाज अपने उद्देश्य को लेकर न चला तो वह भी एक सम्प्रदाय बन कर रह जाएगा और सब गड़बड़ हो जाएगा। सत्य में यही हो रहा है।

आर्य समाज स्थापना दिवस हमें प्रेरित कर रहा है। आर्यों! उठो! जागो! अपने को संभालो! कुछ बनो और कुछ करो। दुनियां हमारी ओर देख रही है। आर्य समाज जैसी मातृसंस्था और ऋषि जैसा मार्गदर्शक और कहीं न मिलेगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से पहले कृण्वन्तो स्वयमार्यम को चरितार्थ कर लें तो निश्चित रूप से स्थापना दिवस का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा। हम सच्चाई तथा ईमानदारी से संकल्प और व्रत लें– **इदं आर्यसमाजाय इदं न मम।** आर्य समाज में सेवा, त्याग, नियम, सिद्धान्त तथा अनुशासन का निर्वाह व पालन करेंगे। यही आर्य समाज स्थापना दिवस का सन्देश है।

*– बी.जे.–29, शालीमार बाग*
*दिल्ली–110088*

**बोध कथा**

## क्या ईश्वर है?

एक था पिता– कम्युनिस्ट विचारों का। ईश्वर है, ऐसा वह नहीं मानता था। उसका पुत्र पढ़ता था एक आर्य कॉलेज में। उसके मन पर दूसरी छाप पड़ी थी। वह प्रातः–सायं भजन के लिए बैठ जाता; ईश्वर का नाम लेता, उसे स्मरण करता। पिता इसको सदा कहता–''यह तुम क्यों समय नष्ट करते रहते हो? संसार में कोई ईश्वर नहीं। जिसका तुम नाम लेते फिरते हो, उसका कोई अस्तित्व नहीं।''

पुत्र उसे कहता–''यदि ईश्वर नहीं, तो फिर सृष्टि किसने रची है?''

पिता कहता–''यह सब–कुछ गर्मी और गति का परिणाम है। प्रत्येक वस्तु में उष्णता है, गति है। पता नहीं, कब यह उष्णता बहुत बढ़ी। इसके कारण कहीं कुछ बन गया, कहीं कुछ। स्वयं ही यह सब–कुछ हो गया। इसे बनाने वाला कोई नहीं।''

पुत्र ने सोचा–अपने पिता को किस प्रकार समझाऊँ? कॉलेज में गया, तब भी यह विचार उसके मन में था। एक बड़ा–सा काग़ज लेकर सुन्दर रंगों के साथ वहाँ उसने एक चित्र बनाया। बनाकर घर में आया। उसे कमरे में रख दिया, जिसमें उसका पिता सोया रहता था।

पिता कार्यालय से लौटे तो चित्र को देखा। पुत्र से बोले–''यह चित्र किसने बनाया? यह तो बहुत सुन्दर बना है।''

पुत्र ने कहा–''किसी ने भी तो नहीं बनाया। अपने–आप ही बन गया है।''

पिता ने आश्चर्य से कहा–''अपने–आप?''

पुत्र ने कहा–''हाँ पिताजी, कॉलेज में काग़ज के रिम पड़े थे। उनमें उष्णता और गति आई तो एक रिम से यह काग़ज उड़कर मेज़ पर आ गया। एक अल्मारी में रंग भी पड़े थे। उन्हें गर्मी जो लगी तो उनके अन्दर शक्ति आ गई। अल्मारी से निकलकर वे काग़ज पर गिर पड़े, उसके ऊपर फैल गए और यह चित्र बन गया।''

पिता ने क्रोध के साथ कहा–''मुझसे उपहास करता है, मूर्ख! स्वयं यह बात कैसे हो सकती है?''

पुत्र ने कहा–''वैसे ही पिताजी, जैसे स्वयं यह सृष्टि बन गई। यदि गर्मी की शक्ति से स्वयमेव इतनी बड़ी सृष्टि बन सकती है तो क्या यह छोटा–सा चित्र नहीं बन सकता?''

उसके पिता को समझ आई।

इस शरीर में जिस प्रकार आत्मा प्रत्येक कार्य को चलाता हुआ शरीर का स्वामी बनके बैठा है, वैसे ही इस संसार में, सारे संसार को चलाता हुआ ईश्वर संसार का स्वामी बनके प्रत्येक वस्तु के अन्दर विद्यमान है। इन्द्रियों के पर्दे को हटाकर जिस प्रकार आत्मा के दर्शन होते हैं, इसी प्रकार प्रकृति के पर्दे को हटाकर ईश्वर का दर्शन होता है।

**साभार : बोध कथाएं**

**बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।**

**नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2074 एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस (चैत्र प्रतिपदा) पर विशेष**

# हम अंग्रेजी नव वर्ष क्यों मनायें?

**.....इतिहास साक्षी है वह राष्ट्र कभी नहीं मरते जो अपनी मूल संस्कृत और सभ्यता बचा कर अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं आज इस विषय में एक बात और सोचनीय है कि हम हजारों साल की गुलामी के बाद भी आज अपने मूल धर्म में कैसे जिन्दा हैं? जो चीज हमारे पुरखों ने तलवार और बन्दुक के साये में नहीं गवाई वह चीज हमने मात्र कुछ सालों में खुद को आधुनिक दिखाने में गवां दी।.....**

किसी राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता वहां के मूल निवासियों के हाथ में होती है। वह खुद तय करते हैं किस संस्कृति का हिस्सा बने या अपनी संस्कृति का कितना फैलाव करें। आमतौर पर नववर्ष का नाम आते ही 1जनवरी हमारे दिमाग में आता है। यह जानते हुए भी की वह तारीख अंग्रेजी कलेंडर के हिसाब से हम पर थोप दी गयी है वरना हमारे हिन्दी कलेंडर के हिसाब से उसमें कुछ भी नया नहीं है। लेकिन एक बहाव में हम बह जाते हैं। किसी भी राष्ट्र को उन्नति का उच्च शिखर अवश्य स्पर्श करना चाहिए यह वहां के निवासियों का मूल अधिकार भी है लेकिन अपनी संस्कृति और सभ्यता से समझौता करके नहीं। इससे हम आने वाली पीढ़ी के साथ एक छलावा कर जाते हैं क्योंकि जो कुछ विरासत के तौर पर हमें मिला वह हम अगली पीढ़ी को दे न पायें तो किस्म से हम संस्कृति के उपहास के कारक कहलाये जायेंगे। कल जब हम बच्चों को अगर माघ, पौष, फाल्गुन इत्यादि हिन्दी महीनों के नाम बोले तो वह आपकी ओर अचरज भरी नजरों से देखेंगे जैसे आप किसी और ग्रह के प्राणी हों! पिछले वर्ष मुझे अक्टूबर में नेपाल अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का हिस्सा बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। एक चीज जो हम खुद को हिन्दू राष्ट्र बनाने का दावा ठोकते हैं। यहाँ के बजाय वहां नजर आया। वह थी हमारी संस्कृति वहां गाड़ियों की नम्बर प्लेट पर आपको हिंदी भाषा के अंक और शब्द शुद्ध देवनागरी लिपि में लिखे मिलेंगे। भले ही उस राष्ट्र को गरीब मुल्क समझा जाता हो किन्तु वह राष्ट्र संस्कृति के मामले में हमसे बहुत अधिक समृद्ध है वहां सरकारी छुट्टी रविवार की बजाय शनिवार को होती है रविवार उनके यहाँ सप्ताह के शुरुआत का दिन है न कि अंत का। भले ही हम अपनी राजनैतिक आजादी पाने में तो सफल रहे किन्तु सांस्कृतिक गुलामी में अभी भी हमे जकड़े हुए है।

आप सभी सोच रहे होंगे कि यह सब तो अब हमारे प्रचलन का हिस्सा है इससे दूर कैसे जाया जा सकता है। पढने सुनने तक तो यह बात अच्छी लगती है लेकिन इसे असल जीवन शैली में कैसे उतारें। लोग रूढिवादी विचार धारा को समझेंगे या कहेंगें कि ये चला संस्कृति बचाने। नहीं ऐसा नहीं है! जब हम गर्व के साथ अपनी संस्कृति को ऊपर उठाएंगे तो निश्चित ही हजार लोग आपके साथ खड़े होंगे। अभी हाल ही में होली के दो दिन बाद पढ़ रहा था कि पूरे यूरोप के साथ अमेरिका में इस वर्ष जगह-जगह आयोजन कर लोगों ने होली खेली। वहां की मीडिया ने भी इस त्यौहार को हाथों हाथ लिया। कारण वहां गये भारतियों ने अपने इस त्यौहार को गर्व के साथ उन लोगों के सामने रखा न कि अपनी सोसायटी में इसे फालतू का त्यौहार कहा। जरा सोचिये अपनी संस्कृति और उसके वैज्ञानिक कारणों को हम अन्य के सामने रखेंगे तो निश्चित ही दूसरा प्रभाव में आयेगा।

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अग्रेंजी शासकों ने 1752 में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। 1752 से पहले ईस्वी सन् 25 मार्च से शुरू होता था किन्तु 18वीं सदी से इसकी शुरूआत एक जनवरी से होने लगी। भारत गुलाम था अंगेजों के मातहत कार्य करने वाले भारतीयों की मजबूरी थी कि इस नववर्ष का पालन करें। मातहतों अधिकारियों के आदेश का पालन करने वाली भारतीय जनता धीरे-धीरे इसे ही नववर्ष समझने लगी जो आज 31 दिसम्बर की रात को शराब और शबाब का एक त्यौहार बनकर रह गया। आज का युवा इसकी चपेट में हस कदर है कि दिसम्बर माह में ही कार्यक्रम तैयार होने लगते हैं। कैसे और कहाँ 31 की रात धन और समय की बर्बादी करें।

दो चीज होती है जिसका मैं बार-बार जिक्र कर रहा हूँ एक संस्कृति और दूसरी सभ्यता इनमें थोड़ा भेद होता है। संस्कृत का अर्थ होता है हमारे रीति-रिवाज, हमारी सामाजिक व पारिवारिक परम्पराएँ हमारे त्यौहार उन्हें मनाने का ढंग हमारी पूजा उपासना पद्धति दूसरा हमारी सभ्यता इसके अंतर्गत आता है। हमारा रहन-सहन, हमारा भवन निर्माण, हमारा खान-पान, हमारा पहनावा, हमारी भाषा। अब जरा दो मिनट गौर से सोचिये क्या ये दोनों चींजे आज हमारे पास उसी असल रूप में हैं जैसी हम चर्चा करते हैं? चलो मान लिया समय के साथ परिवर्तन होता है। सभ्यता में थोड़ा बहुत परिवर्तन आता है लेकिन इतना नहीं कि हम अपना सब कुछ एक बहाव में चौपट कर दें। इतिहास साक्षी है वे राष्ट्र कभी नहीं मरते जो अपनी मूल संस्कृत और सभ्यता बचा कर अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। आज इस विषय में एक बात और सोचनीय है कि हम हजारों साल की गुलामी के बाद भी आज अपने मूल धर्म में कैसे जिन्दा हैं? जो चीज हमारे पुरखों ने तलवार और बन्दूक के साये में नहीं गवाई वह चीज हमने मात्र कुछ सालों में खुद को आधुनिक दिखाने में गवां दी।

31 दिसम्बर के नजदीक आते ही जगह-जगह जश्न मनाने की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती हैं। होटल, रेस्तराँ, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। 'हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डो के साथ दारू की दुकानों की भी चांदी कटने लगती है। कहीं-कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएं दुर्घटनाओं में बदल जाती हैं और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियां-गाड़ियों से भिड़ने लगती हैं।

हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। जिसका न कोई धार्मिक और न ही वैज्ञानिक आधार है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं और तो और, देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचांग पर आधारित होता है। राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। जब यह नववर्ष प्रारम्भ होता है तो शरीर में रक्त बदलता है, बर्फ से जमी झील पिघलने लगती है। नदियों में नया पानी, वृक्षों की शाखाओं पर नये पत्ते, पेड़ों पर नये फूल, यानि कि सब कुछ नया होने लगता है। बसंत का सुहावना मौसम होता है। किसानों के चेहरे पर उल्लास होता है। भारत के सारे त्यौहार का प्रकृति साथ देती है। एक जनवरी वाले नव वर्ष में ऐसा कोई भी प्राकृतिक संदेश नहीं होता जिससे समाज को खुशी का अहसास होता हो या फिर प्रकृति में कोई बदलाव या नयापन हो!

*- राजीव चौधरी*

# विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

गुरु बिरजानन्द संस्कृतकुलम्, आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक

शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार

आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार

वैदिक शिक्षा केन्द्र, आर्यसमाज प्रीत विहार

दानवीर सेठ रघुमल आर्य जी के जीवन पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल

रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज मंगोलपुरी नगर

आर्य पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी

आर्य वीरांगना दल, आर्यसमाज मंगोलपुरी

आर्य वीर दल, आर्यसमाज प्रीत विहार

आर्यसमाज सन्देश विहार की प्रस्तुति

# स्वागत समिति द्वारा किया गया आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत

# बच्चों द्वारा दी गई योजनाओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी

बच्चों ने बनवाए टैटू

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 27 मार्च, 2017 से रविवार 2 अप्रैल, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30/31 मार्च, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर.एन.आई. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 मार्च, 2017



# नव सस्येष्टी यज्ञ के साथ हुआ समारोह का शुभारम्भ

यज्ञ करते आर्य परिवार

नव सस्येष्टी यज्ञ सम्पन्न कराते
वैदिक विद्वान आचार्य उषर्बुध जी

श्रीमती नीलम एवं श्री यशपाल आर्य जी

डॉ. श्रीमती अमाशशि एवं श्री राजेन्द्र दुग्गा जी

श्रीमती मीना सूद एवं श्री श्रीकान्त सूद जी

श्रीमती सुमेधा एवं श्री नितिन गुप्ता जी

श्रीमती शबनम एवं कै. अशोक गुलाटी जी

श्रीमती अंजि मखीजा एवं श्री अंकुर मखीजा जी

श्रीमती शिल्पा एवं श्री मनीष गोयल जी

श्रीमती नीतू एवं श्री संजीव मल्होत्रा जी

# फूलों की होली खेलने का उत्साह कुछ अलग ही था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुदित एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह

Focus Graphics
9811331874